कर्म एवं जीन्स का अन्तर्सम्बन्ध

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रत्येक जीवित प्राणी की शरीर संरचना और कार्य उसके क्रोमोजोम्स के अनुसार ही होता है। प्रत्येक अवस्था में जीवन को संचालित करने में किसी न किसी प्रकार के प्रोटीन की निश्चित रूप से आवश्यकता होती है। उसका निर्माण किसी विशिष्ट जीन्स के द्वारा किया जाता है। ये जीन्स हमेशा बदलते रहते हैं। यह बदलाव उत्परिवर्तन कहलाता है। प्रत्येक जीवित प्राणी के विशिष्ट लक्षणों का वहन जीन्स के रूप में उसके क्रोमोजोम्स के द्वारा किया जाता है। ये क्रोमोजोम्स कोशिकाओं में होते हैं और शरीर का निर्माण बहुत सी कोशिकाओं के माध्यम से होता है। जीन्स को सक्रिय अथवा निष्क्रिय रखने का कार्य हार्मोन्स, विटामिन्स, खनीज, रसायनों और रोग प्रतिरक्षा प्रणाली के अंतर्गत किया जाता है। जीन्स अपने चारों और के वातावरण कोशिका, पोषाहार और प्रकाश के तापमान से नियंत्रित होते हैं।

जीव और जीवन के बीच अन्तर्सम्बन्ध है। कर्म के सिद्धांत का अध्ययन इस अन्तर को बिल्कुल स्पष्ट कर देता है। जिस प्रकार आनुवंशिकता जीवन से सम्बन्धित है, उसी प्रकार कर्म जीव से सम्बन्धित है, जिसमें पिछले कई जन्मों के कर्म और प्रतिक्रियाएं कर्म शरीर के रूप में संग्रहीत रहते हैं। इस कारण अलग–अलग व्यक्तियों की योग्यता और उसकी असाधारण प्रतिभा केवल वर्तमान जीवन पर ही आधारित नहीं होती, इसका मूल स्रोत इससे भी परे जीव से बधे हुए संग्रहीत कर्मों अर्थात् कर्म शरीर में खोजा जा सकता है। शरीर का महत्वपूर्ण घटक जीन है। यह एक विशिष्ट सूत्र है और अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी सूक्ष्मता मात्र अनुमान से होती है। प्रश्न है हमारी चेतना कहां रहती है? ये क्रोमोजोम्स में मौजूद रहती है या जीन्स में? इसी के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच में इतना अंतर पाया जाता है। व्यक्तियों का स्वयं का प्रयास एक जैसा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति की चेतना भी एक जैसी नहीं होती। कर्म के सिद्धांत के अनुसार

इस असमानता का कारण कर्म है। यदि आज के जीववैज्ञानिक से ये प्रश्न पूछा जाये तो वह यह उतर देगा कि इस असामनता का कारण जीन है।

जीन्स और क्रोमोजोम्स मानव के व्यक्तित्व का निर्धारण करते हैं। उसका स्वभाव और व्यवहार वैसा ही हो जाता है जैसे उसके जीन्स होते हैं। जीन ही समस्त असामनता के लिए जिम्मेदार है। प्रत्येक जीन में साठलाख आदेश होते हैं। कर्म के सिद्धांत के अनुसार कर्म के प्रत्येक कण पर अनन्त निर्देश लिखे हुए होते हैं। विज्ञान केवल जीन्स तक पहुंचा है। जीन भौतिक शरीर का घटक है, परन्तु कर्म सूक्ष्म शरीर का घटक है। भौतिक शरीर के भीतर एक विद्युत शरीर होता है जो सूक्ष्म होता है और एक कर्म शरीर होता है, जो उससे भी अधिक सूक्ष्म होता है। इसके प्रत्येक भाग में अनन्त शब्द अंकित होते हैं। हमारे स्वयं के प्रयासों, अच्छाई, बुरे कार्यों, सीमाओं और विशिष्टताओं के सारे रिकॉर्ड कर्म शरीर में उत्कीर्ण रहते हैं।

आनुवंशिकता विज्ञान ने कर्म के इस सिद्धांत को समझने में हमारे बहुत सहायता की है। जीन आनुवंशिक विशिष्ट लक्षणों के संवाहक है। प्रत्येक विशिष्ट लक्षण के लिए एक विशेष प्रकार का जीन होता है। आनुवंशिकता के ये नियम कर्मवाद के संवादी नियम हैं। भौतिक शरीर से सूक्ष्म शरीर तक की यात्रा अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह शरीर भौतिक है और सूक्ष्म जैविक कोशिकाओं से बना हुआ है। इस शरीर में लगभग साठ खरब कोशिकाएं साथ में रहती हैं। एक सूई की नोक पर अनन्त निगोद जीवों को रखा जा सकता है। निगोद वनस्पति प्रजातियों में से एक है। यह एक सूक्ष्म और गुप्त बात है। परन्तु वर्तमान विज्ञान भी बहुत से सूक्ष्म विचारों को तथ्य के रूप में स्वीकार करता है। हमारे शरीर में खरबों कोशिकाऐ होती है और उनमें क्रोमोजोम्स होते है। प्रत्येक क्रोमोजोम एक हजार–दो हजार जीन्स से बना हुआ होता है। हमारे शरीर की एक कोशिका में छियालिस क्रोमोजोम होते है जो जीन्स से बने हुए होते हैं।

जीन्स अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। आनुवंशिकता, जीन्स और समस्त रासायनिक परिवर्तन तीनों कर्म के सिद्धांत है। जीन हमारे भौतिक शरीर का घटक है और कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर का दोनों शरीर से संबंधित है। जीन्स न केवल माता–पिता के विशिष्ट गुणों का संवहन करते हैं बल्कि वे हमारे बधे हुए कर्मों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। परामनोवैज्ञानिक यह दावा करते हैं कि

हमारे एक अचेतन और अवचेतन मन होता है। अचेतन मन कर्म शरीर है और अवचेतन मस्तिष्क तैजस शरीर होता है। व्यक्तियों के बीच मानसिक स्तर पर संदेशों का आदान–प्रदान, अतीन्द्रिय ज्ञान, भविष्य में होने वाली घटनाओं का ज्ञान और पदार्थ के ऊपर मन के बारे में अतीन्द्रिय भाव बोध में बात करते हैं। प्रत्येक घटना के पीछे कर्म शरीर और हमारी आत्मा पर उसका प्रभाव होता है। इसी प्रकार कर्मशरीर जीन्स के पीछे भी होता है। जीन्स का उल्लेख वासना अथवा संस्कार के रूप में किया गया है। जैसे कारण शरीर वासनाओं को नियंत्रित करता है, वैसे ही डी.एन.ए. के बारे में समझा जाता है कि वह जीन्स को नियंत्रित करता है। इस प्रकार कर्म अपनी भूमिका जीन्स के माध्यम से निभाता है। कर्म और जीन्स में घनिष्ठ संबंध है।